SCERT, Raipur

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के नवनियुक्ति शिक्षक प्रशिक्षकों का उन्मुखीकरण

10 अगस्त से 13 अगस्त 2021तक

प्रारंभिक शिक्षा में पत्रोपाधि (डी.एल.एड.)
Diploma in Elementary Education (D.El.Ed.)

प्रस्तुति – डेकेश्वर प्रसाद वर्मा
प्रकोष्ठ प्रभारी – डी.एल.एड पाठ्यक्रम

- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) द्वारा प्रारंभिक कक्षाओं के लिए निर्धारित की गई अर्हताओं के अनुरूप भावी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने हेतु छत्तीसगढ़ में भी "शिक्षा में पत्रोपाधि" (डिप्लोमा इन एजुकेशन) पाठ्यक्रम संचालित था।
- NCTE अधिनियमों के निर्देशों के तहत छत्तीसगढ़ राज्य में संचालित डी.एड. पाठ्यक्रम को NCTE-2014 के अधिनिमय अनुसार डी.एल.एड. Diploma in Elementary Education (DElEd) पाठयक्रम के रूप में परिवर्तन करने हेतु छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय महानदी नया रायपुर द्वारा 19 दिसम्बर 2017 को प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान किया गया।

- तत्पश्चात SCERT, ने डी.एड.एड़ पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु डाइट के संकाय सदस्यों व देश के शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी संस्थानों – अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, दिगन्तर, विद्याभवन, एकलव्य, आई.सी.आई.सी.आई, टाटा इंस्टीट्यूट मुंबई, एल. एल.एफ. परिषद् के सेवानिवृत्त प्राध्यापक, स्थानीय विश्व विद्यालय के शिक्षाविदों को आमत्रित कर प्रचलित डी.एल. पाठ्यक्रम को
- NCET-2014 के दिशा–निर्देश में Syllabus में क्या Gap है। विषयवार तैयार किया गया।

- सत्र 2017 में नए पाठ्यक्रम को राज्य में लागू किया गया।
- NCTE के गाइडलाइन के अनुसार **सैद्धांतिक पाठ्यक्रम** में नए विषय – 1. शैक्षिक तकनीकी, 2.शालेय संस्कृति, नेतृत्व विकास को शामिल किया गया। 3. विविधता, समावेशी शिक्षा और जेण्डर 4. अंग्रेजी विषय को प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में रखा गया।
- **व्यावहारिक पाठ्यक्रम** में कम्प्यूटर शिक्षण के साथ साथ और तीन नये विषय (1) कला शिक्षा एवं लोक संस्कृति (2) योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावात्मक शिक्षा (3) कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास रखा गया।
- शाला अनुभव कार्यक्रम में भी एन.सी.टी.ई. के मार्गदर्शन के अनुसार प्रथम वर्ष में 04 सप्ताह का शाला अनुभव कार्यक्रम रखा गया है एवं द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह का शाला अनुभव कार्यक्रम रखा गया।

- सत्र 2020 में डी.एल.एड.पाठ्यक्रम प्रायोगिक संस्करण को अंतिम स्वरूप देने हेतु राज्य के समस्त शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों से प्राप्त फीडबैक एवं सुझावों के अनुसार –
- पाठ्य पुस्तकों के अध्याय/पाठ/शीर्षक/ उपशीर्षक अंग्रेजी में दिए गए है।
- छ.ग. के पर्यटन स्थल राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय गान एवं छ.ग. के राज गीत को कवर पेज के पृष्ठभाग में शामिल किया गया है।

- कुछ पाठ्य पुस्तक जैसे शैक्षिक तकनीकी (प्रथम वर्ष) के पाठों को पुनः व्यवस्थित (Rearrange) किया गया है ।
- हिंदी पाठ्य पुस्तक हिंदी शिक्षण स्तर 1 एवं स्तर 02 में की समीक्षा LLF एवं TISS के द्वारा समीक्षा किया गया। तथा पाठों को पुनः व्यवस्थित (Rearrange) किया गया है ।
- कम्प्यूटर (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष) के पाठों को पुनः व्यवस्थित (Rearrange) किया गया है ।
- ज्ञान शिक्षणक्रम व शिक्षण शास्त्र पुस्तक का नाम में कुछ आंशिक परिवर्तन किया गया है। शिक्षा क्रम शब्द का प्रचलन आम बोलचाल में कम होता है इसीलिए शिक्षणक्रम के स्थान पर पाठ्यचर्या किया गया है।
- प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) दस्तावेज को शामिल किया गया है।

- कुछ पाठ्य पुस्तक जैसे शैक्षिक तकनीकी (प्रथम वर्ष) के पाठों को पुनव्यवस्थित (Rearrange) किया गया है।
- हिंदी पाठ्य पुस्तक हिंदी शिक्षण स्तर 1 एवं स्तर 02 में की समीक्षा LLF एवं TISS के द्वारा समीक्षा किया गया। तथा पाठों को पुनव्यवस्थित (Rearrange) किया गया है।
- कम्प्यूटर (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष) के पाठों को पुनव्यवस्थित (Rearrange) किया गया है।
- ज्ञान शिक्षणक्रम व शिक्षण शास्त्र पुस्तक का नाम में कुछ आंशिक परिवर्तन किया गया है। शिक्षा क्रम शब्द का प्रचलन आम बोलचाल में कम होता है इसीलिए शिक्षणक्रम के स्थान पर **पाठ्यचर्या** किया गया है।

- ये प्रतिफल एक प्रकार से जाँच बिंदु है, जो गुणात्मक या मात्रात्मक रूप में मापे जा सकते है, जिसमें बच्चों की प्रगति का आकलन करने में मदद मिलती है।
- इसका परिचय छात्राध्यापकों को देने के उद्देश्य से ही डी.एल.एड. प्रथम वर्ष की पुस्तकों में कक्षा 1 से 5 तक तथा द्वितीय वर्ष की पुस्तकों में कक्षा 6 से 8 तक के सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes) को शामिल किया गया है।
- इस प्रकार सत्र 2020 में प्रायोगिक संस्करण को अंतिम स्वरूप दिया गया है।
- जो कि सत्र 2021–22 से प्रथम वर्ष एवं 2022–23 में द्वितीय वर्ष में लागू होंगे।

परीक्षा योजना

प्रश्न के स्वरूप –सैद्धांतिक परीक्षा प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

(संस्कृत/अंग्रेजी विषय को छोड़कर) पूर्णांक – 80 (समय–3 घण्टे)

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	बहुविकल्पिक/ वस्तुनिष्ठ	01	01	प्रश्न 1 खण्ड अ 05 प्रश्न खण्ड ब 05 प्रश्न	01	10
ब	तर्क/कारण से संबंधित प्रश्न	09	09	अधिकत्तम 50 शब्दों में	03	27
स	समझ से संबंधित प्रश्न	07	05	अधिकत्तम 120 शब्दों में	05	25
द	विश्लेषणात्मक प्रश्न	05	03	अधिकत्तम 200 शब्दों में	06	18
योग		22	18			80

परीक्षा योजना

प्रश्न के स्वरूप –सैद्धांतिक परीक्षा

प्रथम वर्ष अंग्रेजी पूर्णांक – 80 (समय– 03 घण्टे)

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	बहुविकल्पिक/ वस्तुनिष्ठ	01	01	प्रश्न 1 खण्ड अ 04 प्रश्न खण्ड ब 04 प्रश्न	01	08
ब	तर्क/कारण से संबंधित प्रश्न	08	08	अधिकत्तम 20 शब्दों मे	02	16
स	समझ से संबंधित प्रश्न	15	11	अधिकत्तम 60 शब्दों में	04	44
द	विश्लेषणात्मक प्रश्न	04	02	अधिकत्तम 100 शब्दों	06	12
योग		28	22			80

परीक्षा योजना

प्रश्न के स्वरूप –सैद्धांतिक परीक्षा

द्वितीय वर्ष अंग्रेजी/संस्कृत

(पूर्णांक – 40 समय–1½ घण्टे/ संस्कृत पूर्णांक – 40 समय–1½ घण्टे) कुल 03 घण्टे

खण्ड	विवरण	पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या	हल किए जाने वाले प्रश्नों की संख्या	कुल शब्दों में	अंक	कुल अंक
अ	बहुविकल्पिक/ वस्तुनिष्ठ	01	01	प्रश्न 1 खण्ड अ 04 प्रश्न	04	04
ब	तर्क/कारण से संबंधित प्रश्न	07	07	अधिकत्तम 20 शब्दों मे	02	14
स	समझ से संबंधित प्रश्न	06	03	अधिकत्तम 60 शब्दों में	04	12
द	विश्लेषणात्मक प्रश्न	04	02	अधिकत्तम 100 शब्दों	05	10
योग		18	13			40

1. **व्यावहारिक मूल्यांकन – दो समूहों में विभक्त किया गया है –**

- व्यावहारिक मूल्यांकन के अन्तर्गत केवल शाला अनुभव कार्यक्रम का मूल्यांकन **छ. मा.शि.मण्डल से नियुक्त बाहृय** परीक्षक द्वारा किया जावेगा

- शेष व्यावहारिक विषयों – कम्प्यूटर, शिक्षण कला। शिक्षा एवं लोक संस्कृति। योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं भावात्मक शिक्षा। कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास का आंतरिक एवं बाहृय मूल्यांकन संबंधित संस्था के प्राचार्य द्वारा अपने नजदीक के डी. एल.एड प्रशिक्षण संस्थान के अकादमिक सदस्यों को आमंत्रित कर बाहृय मूल्यांकन सम्पन्न कराया जावेगा।

1. व्यावहारिक मूल्यांकन – दो समूहों में विभक्त किया गया है –

1.5. कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास– भाग–एक एवं भाग दो आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन (प्रशिक्षण संस्थान द्वारा)

टीप – व्यावहारिक मूल्यांकन के अन्तर्गत केवल शाला अनुभव कार्यक्रम का मूल्यांकन छ.मा.शि.मण्डल से नियुक्त बाह्य परीक्षक द्वारा किया जावेगा तथा शेष व्यावहारिक विषयों – कम्प्यूटर, शिक्षण कला। शिक्षा एवं लोक संस्कृति। योग शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं भावात्मक शिक्षा। कार्य शिक्षा एवं व्यावसायिक विकास का आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन संबंधित संस्था के अकादमिक सदस्यों द्वारा सम्पन्न किया जावेगा।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम

School Internship Program

- स्कूल स्थानबद्ध प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) कार्यक्रम द्वारा भावी शिक्षक अपने व्यवसाय से परिचित होते है, जहां उन्हें शाला की वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करने का अनुभव प्राप्त होता है।
- छात्राध्यापक सीधे कक्षा शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया से जुड़ता है एवं शालेय शैक्षिक, सहशैक्षिक गतिविधियों के द्वारा उसे समाज और समुदाय से जुड़ने में मदद मिलती है जिससे उसकी अंत:दृष्टि का विकास होता है। वह अपने कार्यों का स्वमूल्यांकन व विश्लेषण कर आगामी शिक्षण कार्य योजना बनाता है, जिससे बच्चों को अधिगम के अधिक से अधिक अवसर मिलते हैं।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम

School Internship Program

- छात्राध्यापक प्रथम वर्ष के **शाला अवलोकन** में – बच्चे कैसे सीखते हैं, सीखने के दौरान बच्चों को कहाँ–कहाँ किस तरह की कठिनाइयाँ आती है व क्यों आती है तथा उसके लिए क्या किया जा सकता है इस पर समझ बनाने का प्रयास करते है तथा नियमित विचार कर उसका सतत् आकलन करते हुए आगे बढ़ते है।
- छात्राध्यापक को द्वितीय वर्ष **शाला अनुभव** कार्यक्रम पूरा करना होता है जिसमें 16 सप्ताह शाला में व्यतीत कर उन्हें वे सभी कार्य करने हैं जो एक शिक्षक अपने विद्यालय में करता है।

स्थानबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम

School Internship Program

- साथ ही विषय के अतिरिक्त विद्यालय के सम्पूर्ण शैक्षिक व पाठ्येत्तर कार्यों से जुड़कर भावी शिक्षक के रूप में अपने को तैयार करते है|
- इस प्रकार यह कार्यक्रम प्रथम वर्ष 4 सप्ताह शाला अवलोकन के रूप में तथा द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह का शालानुभव कार्यक्रम संपन्न होता है|
- छात्राध्यापक विद्यार्थियों से फीडबैक प्राप्त कर अपने अधिगम अनुभवों के आधार पर अधिक से अधिक सीखने का प्रयास करता है, ''स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम'' मात्र उपाधि प्राप्ति के अधीन न रहकर छात्राध्यापकों को एक योग्यताधारी एवं व्यावसायिक रूप से भावी शिक्षक बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होता है|

SCERT, Raipur

धन्यवाद